शहरी ताल में अनोखे प्राणी

लेखन: **अशीष कोठारी**
चित्रांकन: **संगीता कडूर**

पठन स्तर ४

'Wildlife in a City Pond' by Ashish Kothari
© Pratham Books, 2014. Some rights reserved. CC-BY-SA 3.0

Illustrated by Sangeetha Kadur
© Sangeetha Kadur, 2014. Some rights reserved. CC-BY-SA 3.0

First English Edition: 2014

ISBN: 978-81-xxxx-xxx-x

Typsetting and Layout by: Pratham Books, Bangalore

Printed by: xxxxxxxxxx

Published by:
Pratham Books
www.prathambooks.org

Registered Office:
PRATHAM BOOKS
#621, 2nd floor, 5th Main, OMBR Layout
Banaswadi, Bangalore 560 043
T: +91 80 42052574 / 41159009

Regional Office:
New Delhi
T: +91 11 41042483

The development of this book has been supported by

parag
Promoting innovative publishing in education
A SIR RATAN TATA TRUST INITIATIVE

cc BY SA

Some rights reserved. The story text and the illustrations are CC-BY-SA-3.0 licensed. Which means you can download this book, remix illustrations and even make a new story - all for free! To know more about this and the full terms of use and attribution visit **http://prathambooks.org/cc**.

PRATHAM BOOKS

शहरी ताल में
अनोखे प्राणी

लेखनः **अशीष कोठारी**

चित्रांकनः **संगीता कडूर**

हिन्दी अनुवादः **मधु बी. जोशी**

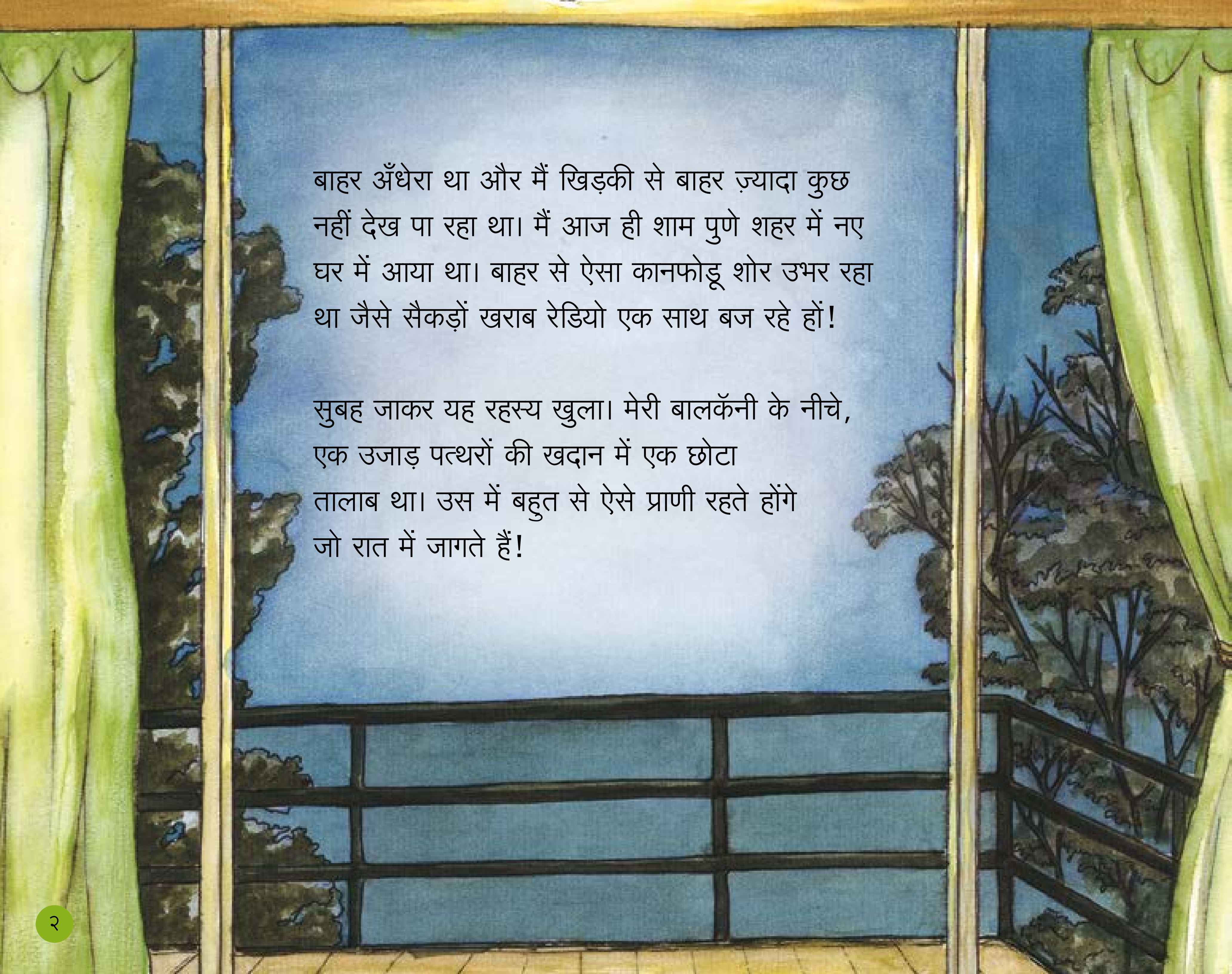

बाहर अँधेरा था और मैं खिड़की से बाहर ज़्यादा कुछ नहीं देख पा रहा था। मैं आज ही शाम पुणे शहर में नए घर में आया था। बाहर से ऐसा कानफोड़ू शोर उभर रहा था जैसे सैकड़ों खराब रेडियो एक साथ बज रहे हों!

सुबह जाकर यह रहस्य खुला। मेरी बालकॅनी के नीचे, एक उजाड़ पत्थरों की खदान में एक छोटा तालाब था। उस में बहुत से ऐसे प्राणी रहते होंगे जो रात में जागते हैं!

अगले एक बरस, मैंने तालाब में अविश्वसनीय बदलाव होते हुए देखे। गर्मियों में यह इलाका सूखा और उजाड़ दिखता है। लेकिन बरसात का मौसम आते ही तालाब से जीवन यूँ फूट उठता जैसे संचालक का संकेत मिलते ही वाद्यवृन्द का संगीत शुरू हो जाता है।

प्यासी धरती पर बरसात की पहली बूँदें पड़ते ही एक मनमोहक सोंधी खुशबू फैल जाती। यह बूँदें वह चमत्कार करतीं जो कोई जादूगर कभी नहीं कर सकता। वह सूखी, भूरी धरती को हरे–नीले रंग के नखलिस्तान में बदल देतीं!

कुछ ही दिनों में, धूप में नरकुल की धारदार डंडियाँ चाँदी की तरह चमकने लगी थीं। मरे और उजाड़ से दिखने वाले पौधे, अचानक उमग कर उठ खड़े हुए थे।

पतेरा या टाइफा के कत्थई–भूरे सिट्टे हवा में झूम रहे थे और आसपास के पौधों के कपास जैसे फूल हर जगह उड़ते दिख रहे थे।

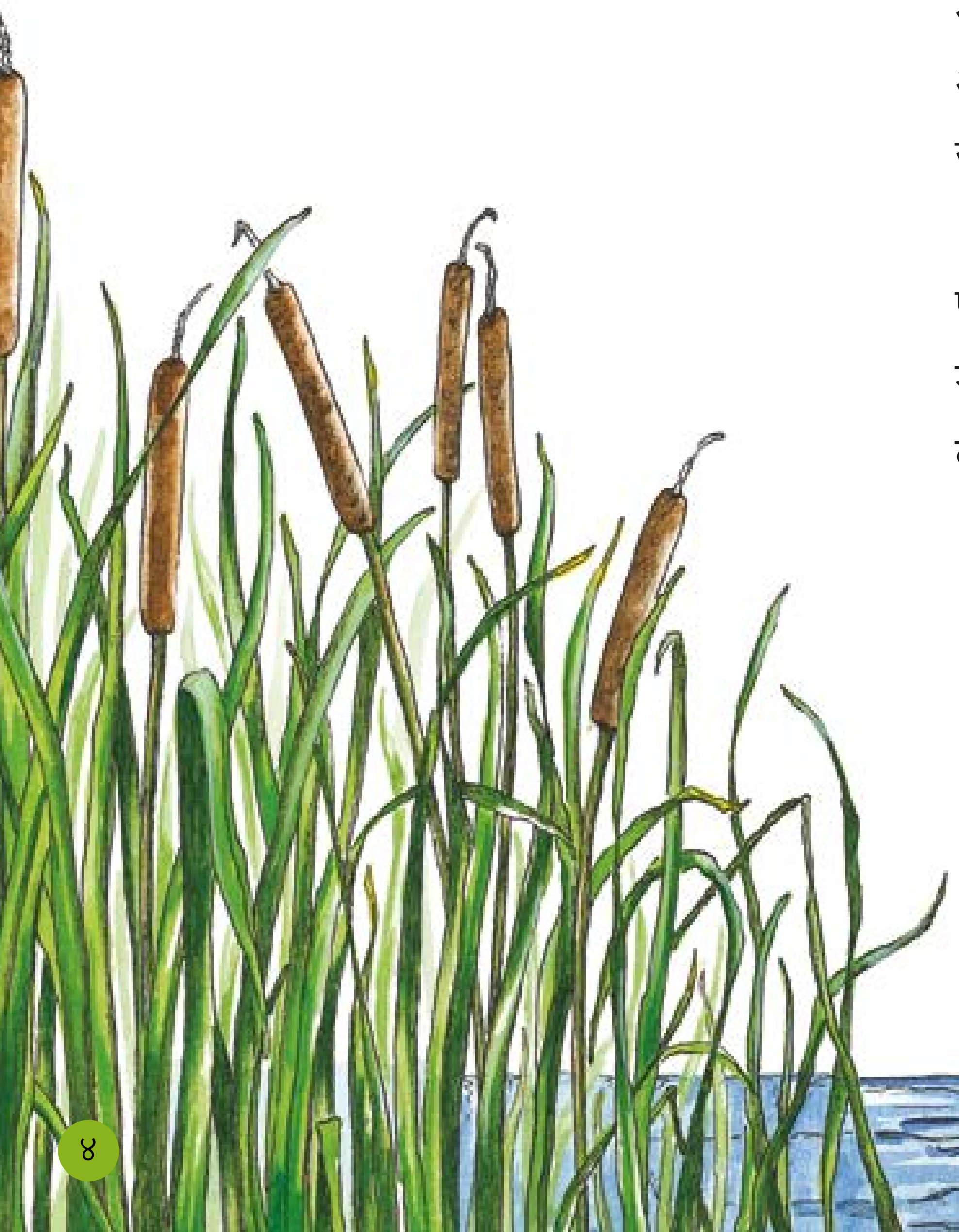

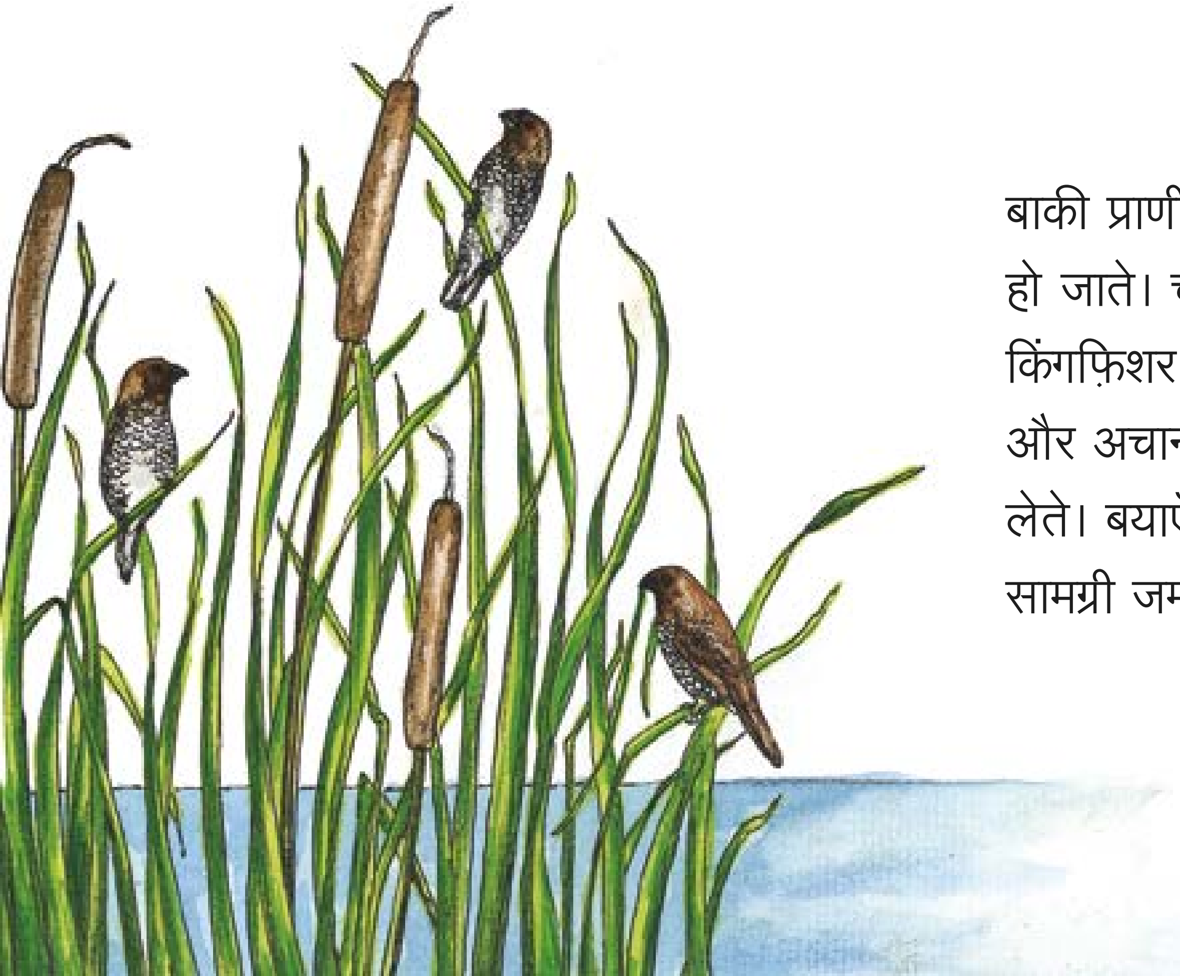

बाकी प्राणी भी प्रकृति के इस नाच में शामिल हो जाते। चमकीले नीले किलकिले यानि किंगफ़िशर पक्षी शाखों पर बैठे इन्तज़ार करते और अचानक झपट्टा मार कर मछली लपक लेते। बयाएँ और मुनियाएँ घोंसला बनाने की सामग्री जमा करने के लिए नरकुलों को नोचतीं।

तालाब की ढलवानों के पास, टिटहरियों की एक जोड़ी धूम मचाए रहती। शायद वे ज़मीन में उस छोटे से गड्ढे की रखवाली कर रहे थे जो उनका घोंसला था और जिसमें मटियाले से अण्डे रखे थे। मुझे तो ऐसा ही लगा, क्योंकि जब भी कोई उस नन्हे गड्ढे के पास आता, वे शोर मचाते उड़ जाते और चीख–चीख कर कहते, ''डू इट, डू इट, डू इट।''

मैंने देखा कि धूप से पानी में कुछ पत्थर चमक रहे थे। लेकिन जैसे ही मैंने अपनी दूरबीन से देखा तो मैं हैरान रह गया। वे कछुए थे! और तब मैंने पानी के अन्दर हलचल देखीः बहुत सारे फ़्लैपशैल कछुए तैर रहे थे, सिर्फ़ उनके सर पानी से बाहर दिख रहे थे। कुल हफ़्ते भर पहले तक तो ज़मीन उजाड़ पड़ी थी, अब कछुए कहाँ से आ गए? एक किताब में मैंने पढ़ा कि वो गर्मियों में ज़मीन के अन्दर सो जाते हैं और तालाब के भरने का इन्तज़ार करते हैं। उनकी शान में मैंने तालाब को फ़्लैपशैल तालाब का नाम दे डाला!

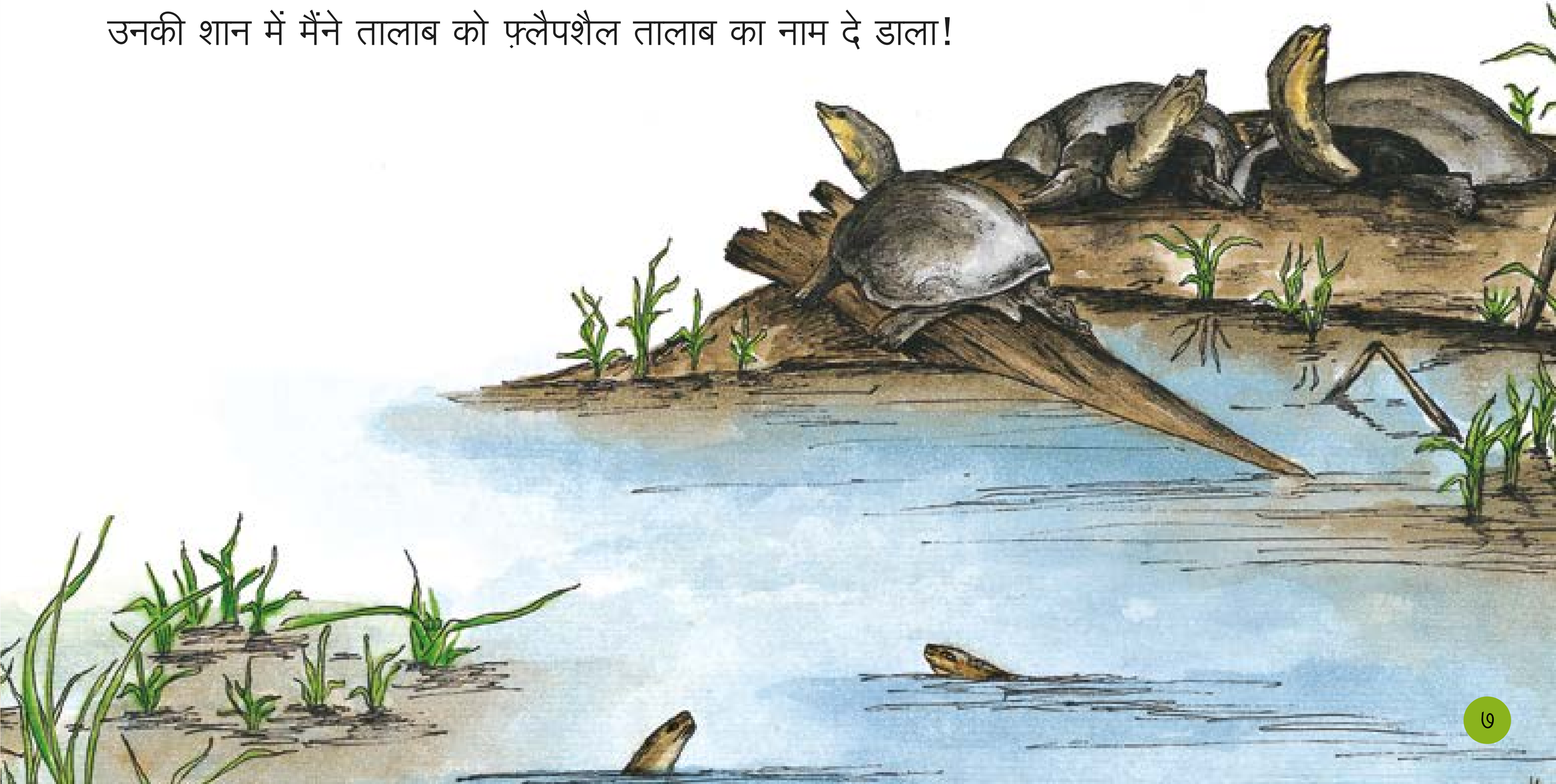

बहुत सी चिड़ियाएँ कछुओं के आसपास चल रही थीं जिन्हें वो अनदेखा कर रहे थे। सफेद छातीवाली जलमुर्गाबियाँ बिना हड़बड़ी दिखाए, ख़रामा–ख़रामा खाना तलाश कर रही थीं। शिकारी पक्षियों के खतरे की सम्भावना भाँपते दो–तीन तालाबी बगुले सतर्कता से नरकुल के झुण्ड में घूम रहे थे। बरसात के मौसम ने ज़ोर पकड़ा तो धब्बेदार चोंचवाली बत्तखें फ़्लैपशैल तालाब पर आ पहुँचीं। वह घोंघे और पानी के पौधे बीनतीं और फिर अपने दूसरे ‘प्राकृतिक ढाबों’ की ओर उड़ जातीं!

कभी–कभी हवा में ढेरों उड़ने वाले कीड़े–मकोड़े भरे होते: चमकीली लाल ड्रैगन फ़्लाई या चिउरे, कई रंगबिरंगी तितलियाँ और बहुत पास आ जाने पर ही दिखने वाली नाज़ुक डैम्सेल फ़्लाई। कीड़ों और चिड़ियों की आवाज़ें रात के शोर से एक अलग ही सुरीली रागिनी सुनातीं।

मैं सोचता था कि इस छोटे से तालाब में बड़े जानवर नहीं हो सकते लकिन यह मेरी गलतफ़हमी थी! अक्सर शर्मीले नेवले पानी के किनारे दिख जाते और एक बार तो तीन छोटे बच्चों के साथ नेवलों का पूरा परिवार ही आया था! और जहाँ नेवले हों वहाँ साँप क्यों नहीं होंगे? सचमुच ही मैं बहुत भाग्यशाली था कि मैंने नरकुलों के बीच पानी में तैरते प्यारे–प्यारे पानी वाले कीलबैक साँप अपनी आँखों से देखे। उनकी त्वचा पे चारखाने के नमूने देखते ही बनते थे।

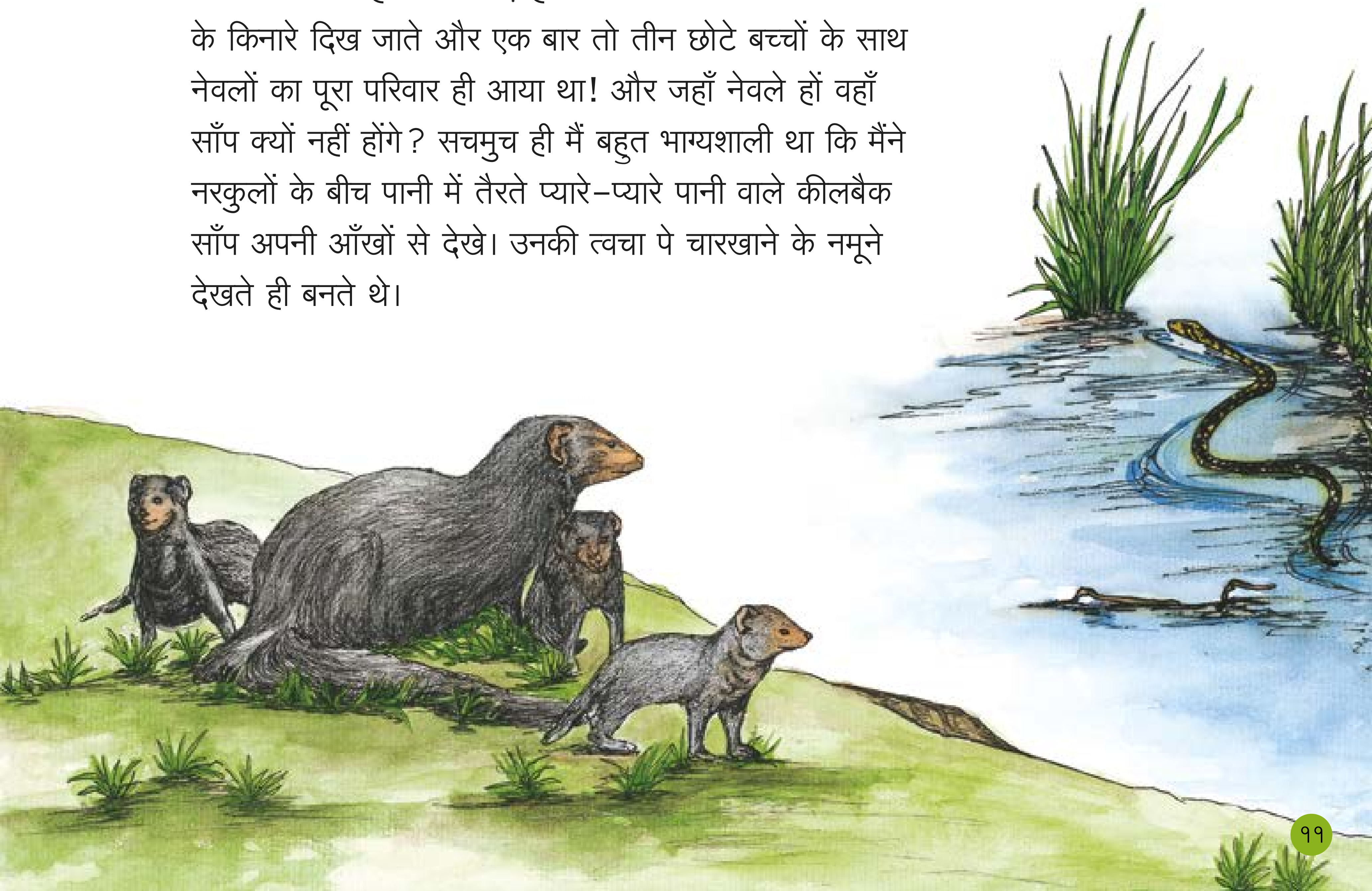

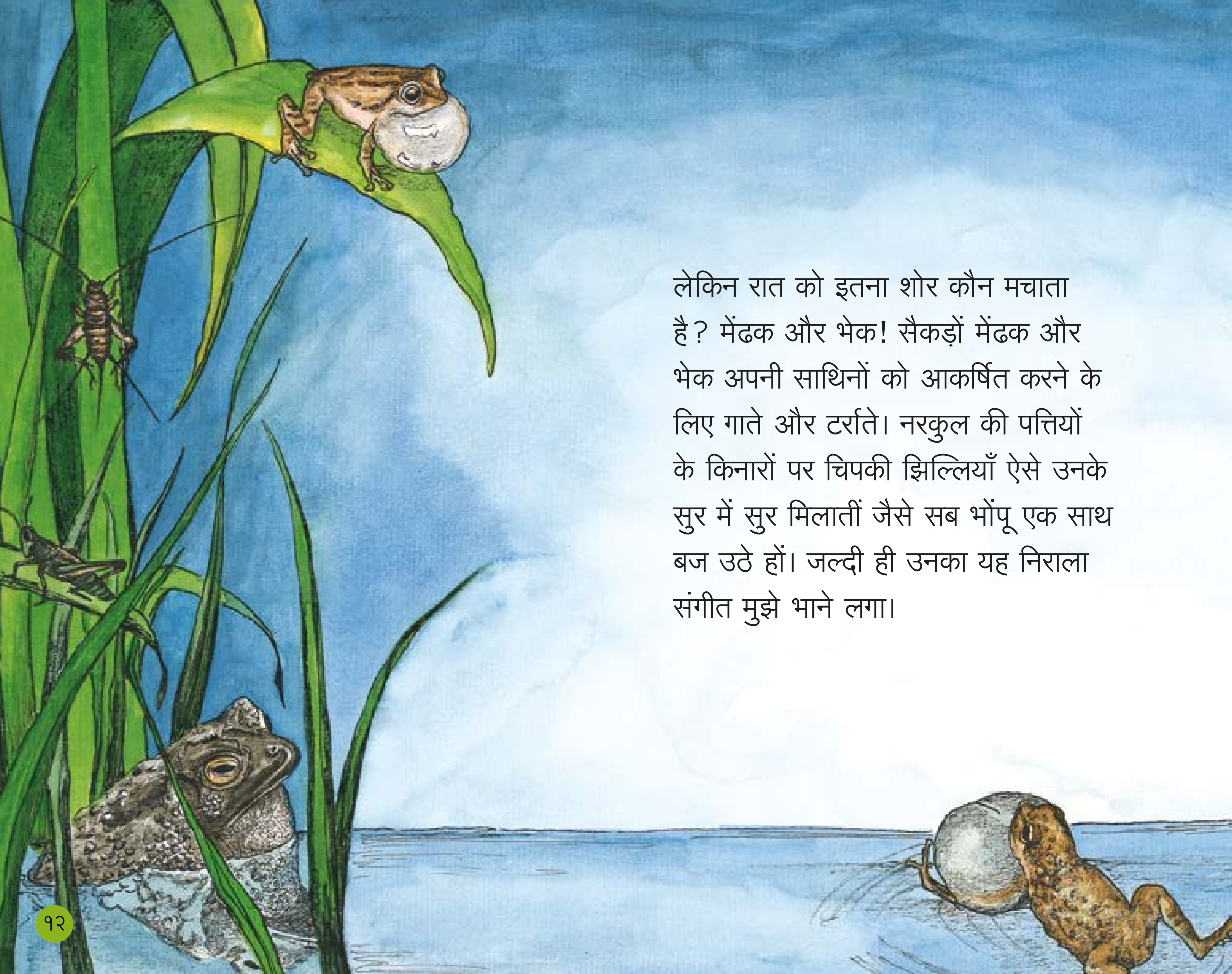

लेकिन रात को इतना शोर कौन मचाता है? मेंढक और भेक! सैकड़ों मेंढक और भेक अपनी साथिनों को आकर्षित करने के लिए गाते और टर्राते। नरकुल की पत्तियों के किनारों पर चिपकी झिल्लियाँ ऐसे उनके सुर में सुर मिलातीं जैसे सब भोंपू एक साथ बज उठे हों। जल्दी ही उनका यह निराला संगीत मुझे भाने लगा।

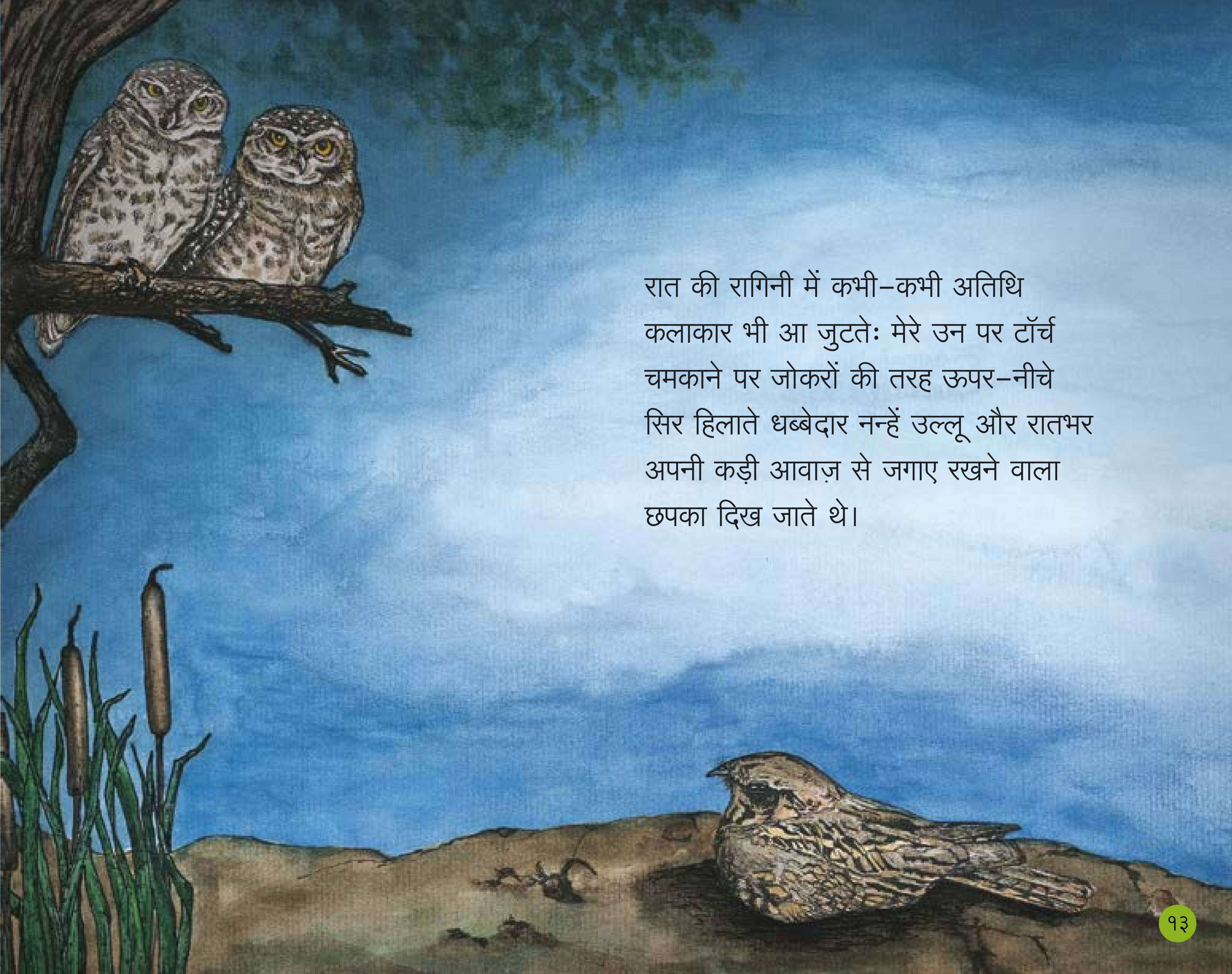

रात की रागिनी में कभी–कभी अतिथि कलाकार भी आ जुटतेः मेरे उन पर टॉर्च चमकाने पर जोकरों की तरह ऊपर–नीचे सिर हिलाते धब्बेदार नन्हें उल्लू और रातभर अपनी कड़ी आवाज़ से जगाए रखने वाला छपका दिख जाते थे।

फिर एक दिन मैं घबरा गया। नहीं साँपों या तीखी चोंचों वाले बगुलों से नहीं, बल्कि उन लोगों को देखकर जो फ़्लैपशैल तालाब के चारों ओर घूमते हुए जैसे उस जगह का मुआयना कर रहे थे! मैंने अपने पड़ोसियों से जाना कि वे लोग फ़्लैपशैल तालाब और आसपास के दलदल से पानी निकाल कर उस ज़मीन पर इमारतें बनाएँगे! मुझे धक्का लगा। मैं ऐसा होने नहीं दूँगा! मैंने और मेरे एक मित्र ने आसपास के बच्चों को इकट्ठा किया। हमने कुछ पत्रकारों को यह स्थान देखने के लिए बुलाया।

दूसरे दिन, अखबारों ने फ़्लैपशैल तालाब को बचाने की बच्चों की विनती की खबर छापी। बस्ती के कुछ लोगों ने भी सरकारी अधिकारियों को फ़ोन किए और उन से तालाब बचाने के लिए अनुरोध किया। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए काम करने वाली कुछ संस्थाएँ भी हमारे साथ जुड़ गईं। हमने नगर आयुक्त को भी बुलाया। पहले तो वे राज़ी नहीं हुए, लेकिन जब उन्होंने मॉनसून का जादू देखा, उन्होंने महसूस किया कि इस तालाब को नष्ट करना बड़े शर्म की बात होगी।

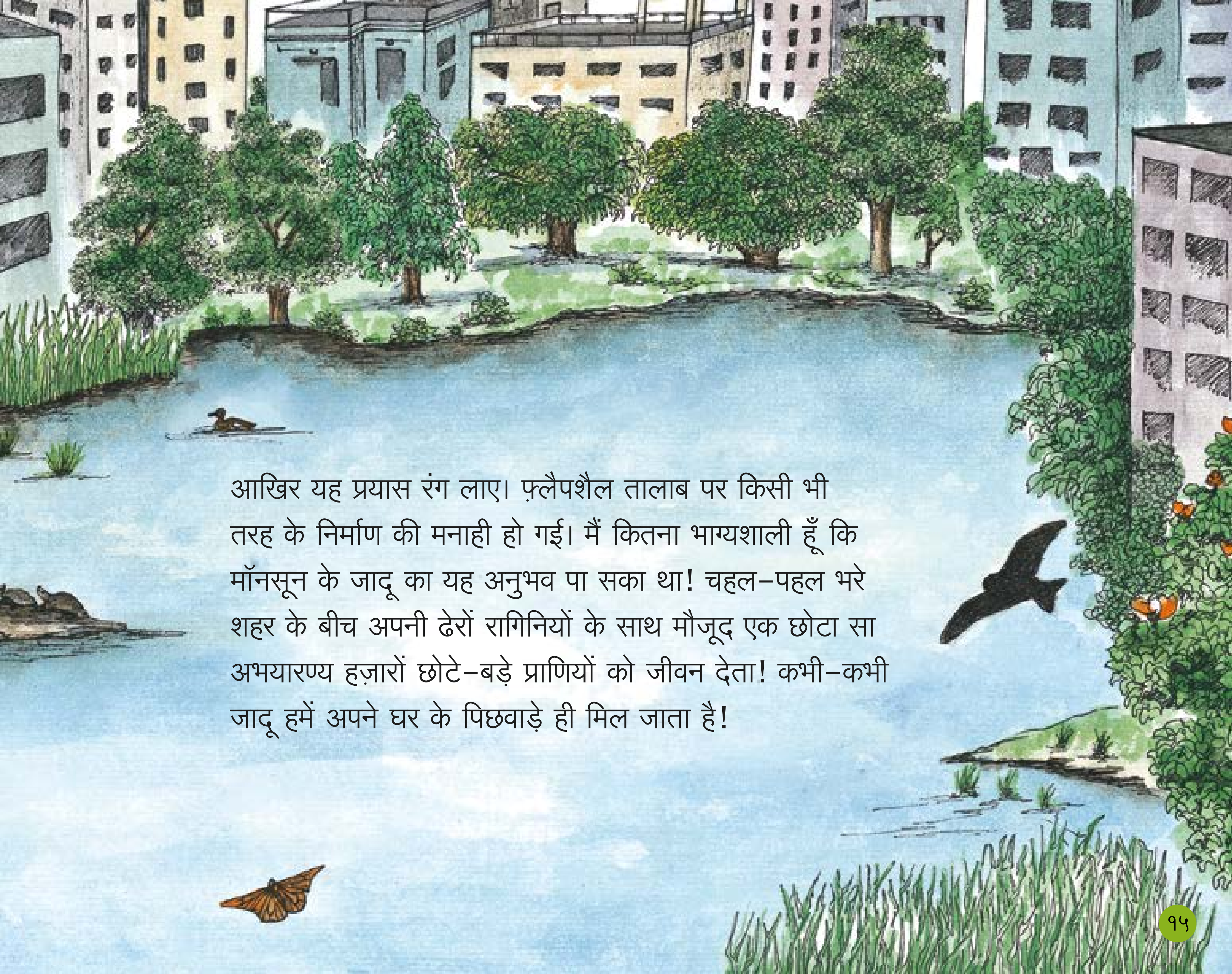

आखिर यह प्रयास रंग लाए। फ़्लैपशैल तालाब पर किसी भी तरह के निर्माण की मनाही हो गई। मैं कितना भाग्यशाली हूँ कि मॉनसून के जादू का यह अनुभव पा सका था! चहल–पहल भरे शहर के बीच अपनी ढेरों रागिनियों के साथ मौजूद एक छोटा सा अभयारण्य हज़ारों छोटे–बड़े प्राणियों को जीवन देता! कभी–कभी जादू हमें अपने घर के पिछवाड़े ही मिल जाता है!

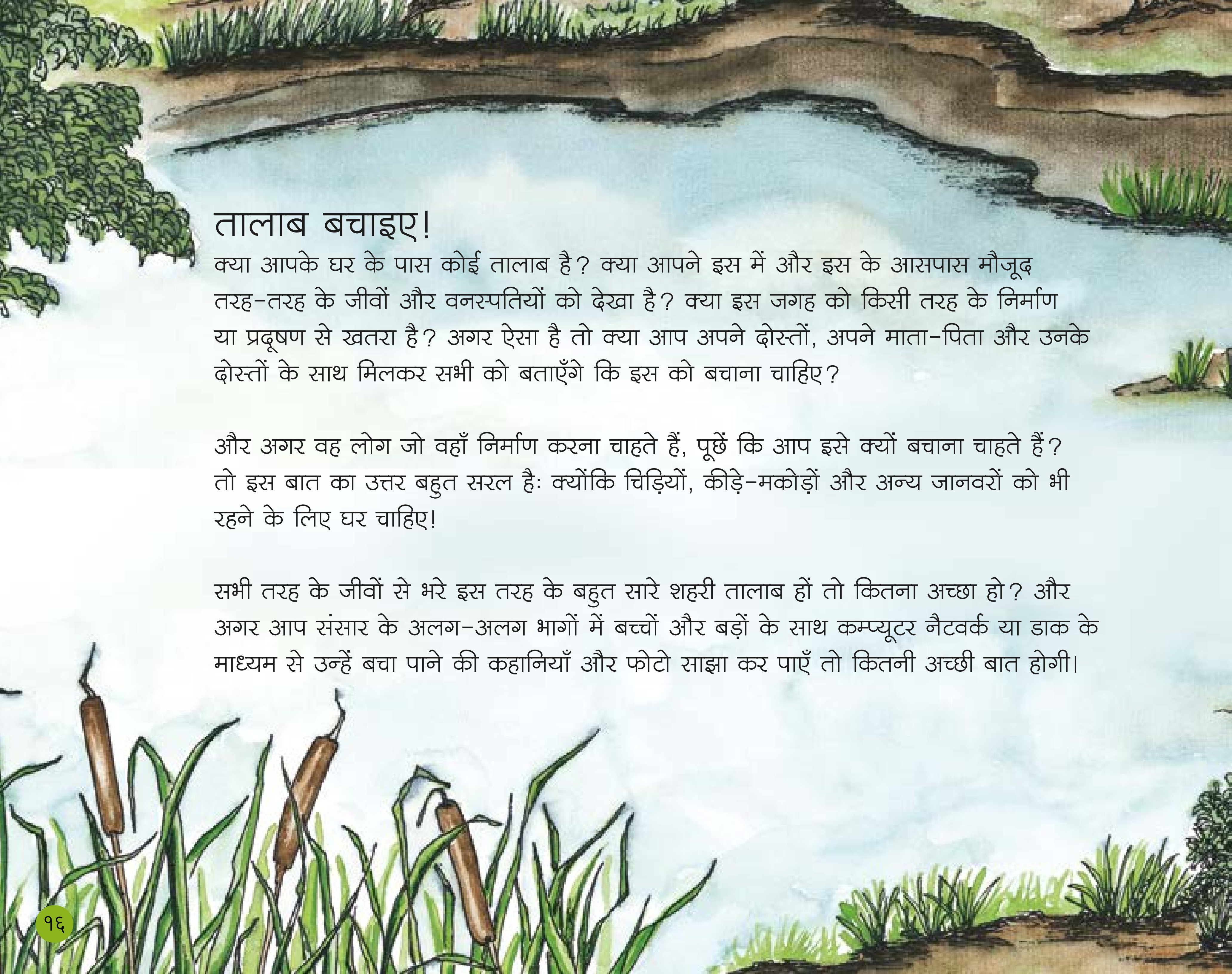

तालाब बचाइए!

क्या आपके घर के पास कोई तालाब है? क्या आपने इस में और इस के आसपास मौजूद तरह-तरह के जीवों और वनस्पतियों को देखा है? क्या इस जगह को किसी तरह के निर्माण या प्रदूषण से खतरा है? अगर ऐसा है तो क्या आप अपने दोस्तों, अपने माता-पिता और उनके दोस्तों के साथ मिलकर सभी को बताएँगे कि इस को बचाना चाहिए?

और अगर वह लोग जो वहाँ निर्माण करना चाहते हैं, पूछें कि आप इसे क्यों बचाना चाहते हैं? तो इस बात का उत्तर बहुत सरल है: क्योंकि चिड़ियों, कीड़े-मकोड़ों और अन्य जानवरों को भी रहने के लिए घर चाहिए!

सभी तरह के जीवों से भरे इस तरह के बहुत सारे शहरी तालाब हों तो कितना अच्छा हो? और अगर आप संसार के अलग-अलग भागों में बच्चों और बड़ों के साथ कम्प्यूटर नैटवर्क या डाक के माध्यम से उन्हें बचा पाने की कहानियाँ और फोटो साझा कर पाएँ तो कितनी अच्छी बात होगी।

Read India

प्रथम बुक्स २००४ में 'रीड इंडिया' अभियान के अन्तर्गत स्थापित हुई। 'रीड इंडिया' बच्चों में पठन को बढ़ावा देने का देशव्यापी कार्यक्रम है। प्रथम बुक्स एक ग़ैर-मुनाफ़ा संस्था है जो अनेक भारतीय भाषाओं में बच्चों के लिये उच्च कोटि की पुस्तकें प्रकाशित करती है। हमारा ध्येय है 'हर बच्चे के हाथ किताब' पहुँचाना और हम इसके द्वारा देश भर में बच्चों को किताबों व पठन का आनन्द देना चाहते हैं। यदि आप इसमें किसी भी तरह से योगदान देना चाहते हैं तो हमें info@prathambooks.org पर ई-मेल भेजें।

स्कूल छात्र के तौर पर अशीष ने पर्यावरण रक्षा समूह कल्पवृक्ष शुरू करने में मदद की। उन्होंने बहुत सारे वन्यजीवन क्षेत्रों और ग्रामीण क्षेत्रों की यात्रा की, ग्रामीण समुदायों से सीखा और असंख्य खतरों को झेलकर बचे रहने में उन की मदद की है। वह ग्रीनपीस और आइ यू सी एन जैसी संस्थाओं से भी जुड़े हैं। अशीष कभी-कभी पढ़ाते हैं, और बहुत से फ़ोटो लेते हैं। उन्होंने संरक्षण, विकास और लोगों के अधिकार के बारे में लगभग ३० पुस्तकें लिखी और सम्पादित की हैं जिनमें *बर्ड्स इन अवर लाइव्स* शामिल है।

संगीता कडूर की अभिलाषा है कला के माध्यम से प्रकृति के तत्व और सुन्दरता को पकड़ पाएँ और अलग-अलग जगहों में घूम सकें। बंगलौर की कर्नाटक चित्रकला परिषद से प्रशिक्षण के बाद, उन्होंने स्वतन्त्र कलाकार के रूप में काम शुरू किया और अब फेलिस क्रिएशन्स के साथ व्यावसायिक चित्रकार के रूप में काम करती हैं। उन्होंने प्राकृतिक इतिहास से कला की उत्पत्ति के अपने जुनून से प्रेरित हो कर प्रकृति से जुड़ी संस्था, ग्रीन स्क्रैप्स का गठन किया है। उन्हें आशा है कि इस के माध्यम से वह प्रकृति के कलाकारों की एक नई पीढ़ी को प्रेरित कर पाएँगी।

शहरों में दलदल और तालाबों को अक्सर बंजर भूमि मान कर उस पर इमारतें बनाने की होड़ लगी रहती है। एक पर्यावरण प्रेमी हमें दिखलाते हैं कि वास्तव में यह संपन्न पारिस्थितिक तंत्र है जिसका संरक्षण होना चाहिये। एक वास्तविक अनुभव पर आधारित यह कहानी शहरी क्षेत्र में पाए जाने वाले वनस्पतियों व वन्य जीवों से हमारा परिचय करवाती है।

स्तरवार पढ़ना सीखें। पठन स्तर ४ की पुस्तक।

पढ़ने की शुरुआत/ सस्वर पठन
बहुत छोटे बच्चों के लिये जो पढ़ना चाहते हैं और कहानियाँ सुनने को उत्सुक हैं

१

पढ़ना सीखने वाले
उन बच्चों के लिये जो सरल शब्द पहचानते हैं और मदद के साथ नये शब्द पढ़ सकते हैं

२

३

अपने आप पढ़ने वाले
उन बच्चों के लिये जो खुद पढ़ने को तैयार हैं

प्रवीण पाठक
बड़े बच्चों के लिये जो पढ़ने में प्रवीण हैं

४

PRATHAM BOOKS

प्रथम बुक्स एक ग़ैर-मुनाफ़ा संस्था है जो बच्चों की पढ़ने में रुचि बढ़ाने के लिये अनेक भारतीय भाषाओं में पुस्तकें प्रकाशित करती है।

www.prathambooks.org

Wildlife in a City Pond
(Hindi)
MRP: ₹ XXXXX